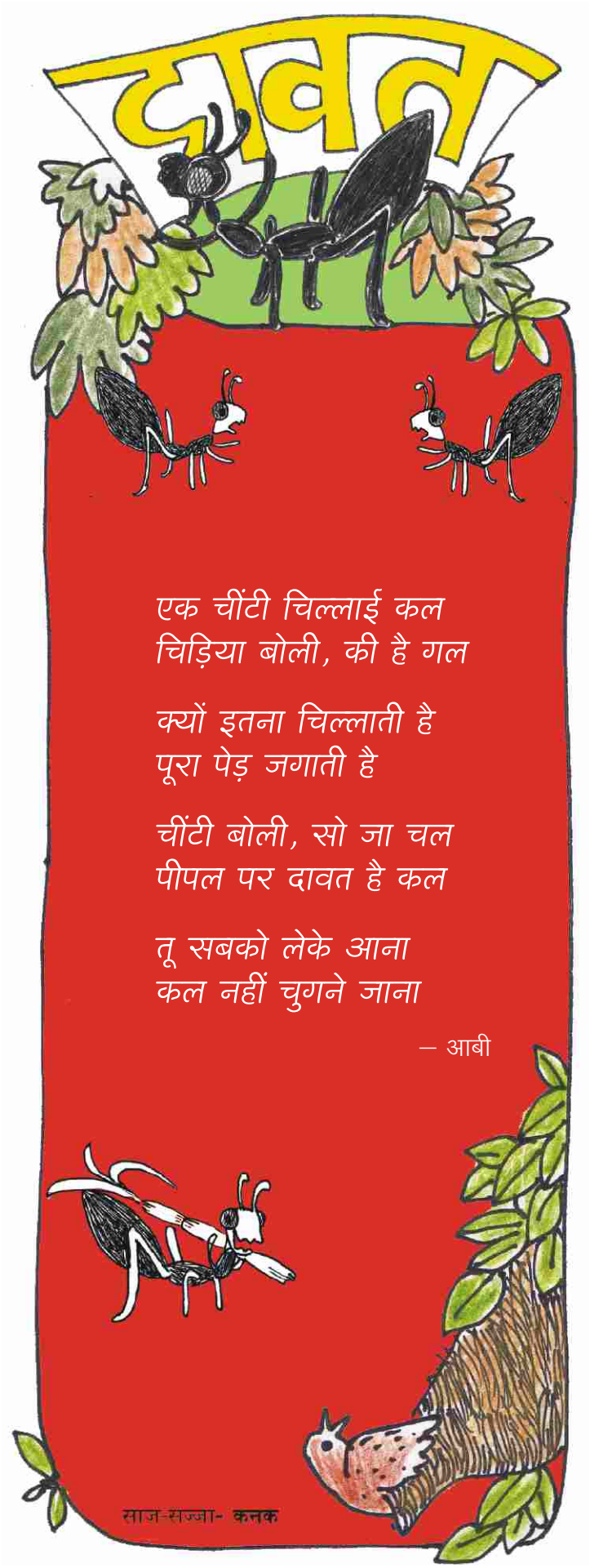

सूर्यवंशी जी की घड़ी

शिवनारायण गौर

सूर्यवंशी जी को लगभग पूरा शहर जानता था। और जाने भी क्यों न! शहर में जो भी सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम होता था वे उसमें बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते थे। कभी वे पेंट-शर्ट पहनते तो कभी पेंट और खादी का कुर्ता। शहर में कहीं भी जाते तो पैदल ही जाते। उनकी कलाई पर एक बड़े डायल वाली घड़ी बंधी रहती। और बगल में खादी का भारी झोला लटकता। पोस्टऑफिस और मन्दिर वे रोज़ ही आते-जाते।

पोस्टऑफिस में कुछ चिट्ठियाँ पोस्ट करके वे नदी किनारे बने शान्त मन्दिर में

पहुँच जाते। हल्के-फुल्के जंगल के बीच बना यह मन्दिर उनका अड्डा था। यहाँ उनके दो घण्टे पढ़ते-लिखते बीतते था। उनकी आँखें भले ही कमज़ोर थीं पर वे बिना चश्मे के ही पढ़ते-लिखते रहे। हर रोज़ वे कई अखबारों में सम्पादक के नाम पत्र लिखते। इसे वे अपनी ज़िम्मेदारी समझते। उनके करीब दस हज़ार पत्र अखबारों में छपे होंगे।

सूर्यवंशी जी की एक खासियत तो हम बता ही चुके हैं कि वे शहर में जहाँ जाते पैदल ही जाते थे। वे मानते थे कि पैदल चलने से लोगों से मेल-मुलाकात अच्छे से हो जाता है। उनकी दूसरी खास बात थी उनकीवक्त की पाबंदी। वे हर जगह पर तय समय से पहले ही पहुँच जाते थे। पर, इसमें उनकी बड़े डायल वाली घड़ी की कोई भूमिका नहीं होती थी। बल्कि कहो कि कोई भूमिका हो ही नहीं सकती थी।

क्योंकि वह तो हमेशा बन्द पड़ी रहती। तीस सालों उनकी कलाई पर यह घड़ी बन्द पड़ी रही। कोई इस बारे में जब पूछता तो वे कहते "अरे हाँ, कल ही बन्द हुई है।"

एक बार उन्होंने इसका राज मुझे बताया। साहित्य में योगदान के लिए उन्हें एक बार उनके दफ्तर के साथियों ने सम्मानित किया। अकसर वे समय से पहले ही दफ्तर पहुँच जाते थे। साथियों ने सोचा कि शायद घड़ी नहीं होने के कारण वे समय से पहले आ जाते हैं इसलिए उन्हें घड़ी भेंट की गई। कुछ दिन बाद यह घड़ी खराब हो गई। सूर्यवंशी जी उसे ठीक कराने ले गए। घड़ीसाज ने कहा कि घड़ी की मशीन खराब हो गई है, इसका ठीक होना अब मुश्किल है। सूर्यवंशी जी के लिए वैसे भी घड़ी की कोई उपयोगिता नहीं थी। उन्होंने सोचा, ठीक नहीं होती तो न सही। लेकिन प्यार से दी गई घड़ी का सम्मान तो करना ही था! इसलिए वे इसे पहने रहते। कभी-कभी यूँ ही वे लोगों से समय पूछ लेते। और अपनी बन्द घड़ी को मिला लेते भी लेते। देखने वालों लगता कि शायद उनकी घड़ी पीछे चल रही है। पूरे तीस सालों तक यह बन्द घड़ी उनकी कलाई पर रही। अभी दो साल पहले सूर्यवंशी जी इस दुनिया से चले गए। लोग उनके बारे में आज भी बातें करते हैं। उन्हें याद करते हैं...।